सत्य मार्ग की खोज, सीरीज-25

इस्लामोफ़ोबिया की वास्तविकता

जमाअत इस्लामी हिन्द

दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, नई दिल्ली-110025

+91-9810032508, 9650022638

www.islamsabkeliye.com

www.youtube.com/truepathoflife

इस्लामोफ़ोबिया की वास्तविकता

इस्लामोफ़ोबिया– अर्थात इस्लाम तथा मुसलमानों के विरूद्ध नकारात्मक सोच पैदा करना – आज विश्व स्तर पर एक अभियान का रूप ले चुका है। इस्लामोफोबिया वास्तव में इस्लाम तथा मुसलमानों के प्रति फ़र्जी डर पैदा करना है। इस डर के द्वारा नफ़रत, दुश्मनी, दुर्भावना तथा नस्लवादी भेदभाव को बढ़ावा देकर मुसलमानों की छवि बिगाड़ने का उद्देश्य है और यह सिद्ध करने का प्रयास है कि ये लोग समाज के लिए हानिकारक हैं। जब यह सोच समाज में फैलने लगती है तो मुसलमान तथा उनका सम्पूर्ण कल्चर हमले की चपेट में आ जाते हैं, तर्क, विवेक एवं वास्तविकता कहीं गुम हो जाती है तथा केवल भावनाओं के सहारे समाज में भय का वातावरण पैदा कर दिया जाता है। पिछले कुछ वर्षों में इसमें वृद्धि देखने को मिली है। इसके पीछे पश्चिमी देशों के सदियों पुराने पूर्वाग्रह भी हैं और कुछ नयी 'ज़रूरतें' एवं उद्देश्य भी हैं ताकि इस्लाम की अच्छी छवि लोगों की दृष्टि से ओझल रहे तथा मुसलमानों को भय के इस वातावरण में दबाव में रखकर वे अपने आर्थिक एवं राजनैतिक एजेन्डे को लागू कर सकें।

गहन विचार ज़रूरी

यद्यपि अभियान को अभी उतनी सफलता नहीं मिली जितना उसके प्रायोजक चाहते हैं। बल्कि इसके विपरीत इस्लाम को जानने की जिज्ञासा और स्वीकृति बढ़ी है, पश्चिम में इस नकारात्मक प्रचार से इस्लाम चर्चा का विषय बना और ग़ैर मुस्लिम बुद्धिजीवियों ने इस्लामोफोबिया एवं नस्लवाद के विरुद्ध आवाज़ उठाई तथा मुसलमानों के साथ एकजुटता का प्रर्दशन किया। केनेडा एवं न्यूज़ीलैंड इसके उदाहरण हैं। चर्च तथा दलाईलामा के वक्तव्य भी सराहनीय हैं। फिर भी क्योंकि एक निराधार एवं नकारात्मक सोच बड़े पैमाने पर फैलायी जा रही है और यह सिलसिला जारी है, इसलिए इसके उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को समझना प्रत्येक न्यायप्रिय व्यक्ति के लिए आवश्यक है, जिससे मानवजाति विशेषकर हमारे देशवासी समय रहते सर्तक हो जायें।

पृष्ठभूमि

डेढ़ हज़ार वर्ष पूर्व हज़रत मुहम्मद सल्ल* के द्वारा जिस सामाजिक क्रांति की स्थापना हुई उससे आम लोगों ने सुख शान्ति, बराबरी, न्याय तथा हमदर्दी की ठंडी छांव को महसूस किया, परन्तु घमंडी तानाशाहों तथा पूर्वाग्रहों से पीड़ित संकीर्ण मानसिकता रखने वालों ने इस्लाम का विरोध किया और दुश्मनी पर उतर आए, यहां तक कि जंग पर भी आमादा रहे। इधर गत शताब्दी में दो 'इज़्म' कम्युनिज़्म तथा कैपिटलिज़्म (पूंजीवाद) का विश्व स्तर पर उदय हुआ। सोवियत यूनियन के बिखराव के पश्चात कम्युनिज़्म का जादू समाप्त हो गया तथा पूंजीवादी प्रणाली के स्वाभाविक दोषों के चलते सामाजिक समस्याएं, आर्थिक संकट तथा राजनैतिक अस्थिरता आदि के कारण यह प्रणाली भी अपना प्रभाव खोने लगी और एक वैचारिक शून्यता (Ideological Vacuum) सी प्रतीत होने लगी। यही वह समय था जब इस्लाम एक प्रणाली या व्यवस्था (System or Order) की हैसियत से सामने आया तथा उच्च स्तरीय अकादमिक शोध के द्वारा विश्व की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान में प्रभावी वैकल्पिक व्यवस्था (Effective alternative system) के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा, जिसकी अनेक गैर मुस्लिम प्रतिष्ठित विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों ने सराहना की और मुस्लिम विद्वानों द्वारा प्रस्तुत तथ्यों का समर्थन एवं अनुमोदन किया। परन्तु यही चीज़ कुछ लोगों को अच्छी नहीं लगी और उन्होंने इस्लाम के योगदान को स्वीकारने के बजाय उसे अपने कल्चर के लिए खतरा समझा। यहीं से इस्लामोफोबिया या इस्लाम के प्रति डर पैदा करने और मानव विरोधी दर्शाने की शुरूआत हुयी। इस विषय पर लेख तथा किताबें भी सामने आईं जिनमे Samuel Huntington की पुस्तक Clash of Civilizations (सभ्यताओं का टकराव) प्रमुख है। लेखक ने निष्कर्ष निकाला कि भविष्य में विश्व की नौ सभ्यताओं में से आठ सभ्यताएं एक खेमे में होंगी, जिनका मुकाबला इस्लामी सभ्यता से होगा। अर्थात पश्चिम ने यह डर उत्पन्न किया कि अब टकराव इस्लाम और मुसलमानों से है और उनकी सभ्यता को अब अगर कोई चुनौती दे सकता है तो वह इस्लाम है। यह है इस्लामोफोबिया की पृष्ठभूमि।

हानिकारक सोच

स्पष्ट है कि इस्लामोफोबिया, इस्लाम तथा मुसलमानों के विरूद्ध भय, घृणा एवं पूर्वाग्रह की सोच पैदा करना है। प्रचार प्रसार

*(सल्ल०): सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अर्थात् उन पर अल्लाह की रहमत (दयालुता) और सलामती हो।

एवं प्रोपेगेन्डे के द्वारा कुछ झूठे एवं निराधार आरोप इस्लाम तथा मुसलमानों से जोड़ दिए गए हैं, जैसे हिंसा, कट्टरता, मुख्यधारा से अलगाव, अपने धर्म के प्रति अति संवेदनशीलता तथा आतंकवाद का समर्थन आदि। मीडिया द्वारा इस्लामोफोबिया को खूब उछाला गया। अमेरिका की 9/11 की घटना के बाद इसमें और वृद्धि हुयी। विश्व स्तर पर इस्लाम विरोधी लॉबी सक्रिय है, जिसने इस्लाम के प्रति 'भय' पैदा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। कुछ सीधे–सादे लोग इस्लाम और मुसलमानों के बारे में जानकारी के अभाव में प्रोपेगन्डे तथा भ्रान्ति का शिकार होकर भयभीत हो जाते हैं तथा वास्तविकता तक पहुंचने का प्रयास नहीं करते। इस प्रकार इस्लाम तथा मुसलमानों की अत्यन्त डरावनी तस्वीर प्रस्तुत की गयी और मुसलमान नफ़रत, तिरस्कार और भेदभाव का शिकार हुए। इस्लामोफोबिया मुसलमानों की नयी पीढ़ी के सामने एक बड़ी रुकावट है तथा उनके मानवाधिकारों का हनन है।

भारत की स्थिति

हमारा देश भी इस्लामोफोबिया के इस वैश्विक अभियान से अछूता नहीं रह सका। यहां भी इस्लाम और मुसलमानों के प्रति नकारात्मक सोच का प्रचार किया गया और घृणा, भय, दुश्मनी तथा पूर्वाग्रह को बढ़ावा दिया गया। यहां डर का यह वातावरण मुसलमानों के प्रति ही अधिक है जबकि इस्लाम, कुरआन और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के प्रति अधिकांश गैर–मुस्लिम भाई श्रद्धा भाव रखते हैं।

मुसलमानों से नाराज़गी के पीछे कुछ ऐतिहासिक तथा राजनैतिक कारण हैं। आठ सौ साल के मुस्लिम शासनकाल की कुछ कमियां भी रही होंगी। अंग्रेज़ों ने अपने शासनकाल में उन्हें उजागर करने के साथ असंख्य झूठी मनगढ़ंत घटनाएं भी इतिहास का हिस्सा बनाकर प्रस्तुत कर दीं ताकि दो बड़े समुदाय आपस में लड़ते रहें तथा वे हुकूमत करते रहें। स्वतन्त्रता आन्दोलन में दोनों समुदाय बराबर से संघर्षरत रहे, इसलिए उम्मीद थी कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अंग्रेज़ों द्वारा फैलाई गयी कटुता पर क़ाबू पा लिया जाएगा, परन्तु देश के विभाजन का आपसी संबंधों पर बुरा प्रभाव पड़ा। स्वतंत्र भारत में हालात सुधरने के बजाय और बिगड़ गए, परिणामस्वरूप साम्प्रदायिक दंगे हुए और बाबरी मस्जिद विध्वंस जैसी दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटी। इधर कुछ वर्षों से सत्ता के ध्रुवीकरण के लिए मुस्लिम दुश्मनी का प्रयोग किया गया और उससे सत्ता प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त भी हुआ, परन्तु समाज को घोर आघात पहुंचा। न्याय, हमदर्दी तथा मानवता इस नकारात्मक मानसिकता की भेंट चढ़ गए और भीड़ द्वारा हिंसा (Mob Lynching) के रूप में सभ्य समाज के दामन पर

दाग़ लग गया। इस कुकृत्य में लिप्त लोगों को सम्मानित करने और इस पर सभ्य समाज के मूक दर्शक बने रहने ने भी अनेक प्रश्न खड़े कर दिए। इस सब में मीडिया की भूमिका अत्यन्त नकारात्मक रही। पाठ्य पुस्तकों एवं शैक्षिक संस्थाओं में भी नयी पीढ़ी के मन में 'नफ़रत' के बीज बोए गए।

बिन्दु क्या हैं?

वह बिन्दु क्या हैं, जिन्हें आधार बनाकर नफ़रत और दुश्मनी का माहौल बनाया जा रहा है, उसमें मुख्यतः जिहाद, हिंसा, गौहत्या, लव जिहाद, तलाक़ जनसंख्यावृद्धि तथा इस्लामी रीति रिवाज निशाने पर है। कुरआन के जिहाद सम्बन्धी आदेशों को संदर्भ तथा प्रसंग से अलग करके मुसलमानों को हिंसा के पोषक के रूप में प्रस्तुत करने की मुहिम बहुत पुरानी है। समय–समय पर यह आरोप दोहराया जाता है कि इस्लाम तलवार के द्वारा अर्थात बलपूर्वक फैलाया गया। इस आरोप का स्पष्ट एवं तर्कपूर्ण उत्तर दिया जाता रहा है। दिव्य कुरआन में किसी भी इन्सान की नाहक़ हत्या को सम्पूर्ण मानवजाति की हत्या के बराबर बताया गया है (5:32)। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की जीवनी भी इस पर गवाह है। जहां तक बल प्रयोग का प्रश्न है, विश्व की अन्य व्यावहारिक व्यवस्थाओं एवं सभ्यताओं की भांति इस्लामी कानून भी मानवजाति के हित में केवल अपरिहार्य परिस्थितियों में अन्तिम विकल्प के रूप में बल प्रयोग की अनुमति देता है, वह भी एक ज़िम्मेदार सत्ता की देखरेख में तथा नियम कानून की पाबन्दियों के अन्तर्गत। आतंक या किसी भी प्रकार की हिंसा या देश के विरूद्ध कार्य का मुस्लिम समाज ने कभी समर्थन नहीं किया। इसी प्रकार गौहत्या का मामला उठाया गया, जिसे आजतक गरमाया जा रहा है। इसमें भी तथ्य कम तथा राजनीति अधिक है। जहां तक लव जिहाद का मामला है, धर्मान्तरण एक स्वभाविक क्रिया है, इसमें ज़ोर ज़बरदस्ती इस्लामी कानून के विरुद्ध है। इसको मुद्दा बनाकर लव जिहाद की नयी शब्दावली गढ़ी गयी जो वास्तविकता से परे है। तलाक़ एक अप्रिय चीज़ होते हुए भी समाज की एक आवश्यकता है इसलिए इस्लाम अपरिहार्य परिस्थितियों में इसकी अनुमति देता है। यही कारण है कि इसकी उपयोगिता को समझकर अन्य समाजों ने भी तलाक़ का प्रावधान किया है। अब जनसंख्या नियन्त्रण के नाम पर मुस्लिम समाज को निशाना बनाया जा रहा है, जबकि आंकड़े गवाह हैं कि मुसलमानों की वृद्धि दर हिन्दुओं की वृद्धि दर की तुलना में कम है। मुसलमानों की धार्मिक मान्यताओं– अज़ान, नमाज़, पर्सनल लॉ, पर्दा तथा संस्थाओं मस्जिद, मदरसे,

क़ब्रिस्तान आदि पर आक्षेप किए गए। इसी के साथ अनेक काल्पनिक आरोप मुसलमानों से जोड़ दिए गए, जैसे– भारत की गरीबी के लिए मुस्लिम शासक जिम्मेदार हैं, मुस्लिम शासकों ने बहुत अत्याचार किए, मंदिरों को ध्वस्त किया, मुसलमान विभाजन के जिम्मेदार हैं, आदि आदि। यह और इस प्रकार के सभी काल्पनिक आरोपों का निराधार होना सिद्ध किया जा चुका है। परन्तु इन बातों की पुनरावृत्ति समाप्त नहीं होती। इन धारणाओं एवं इस मानसिकता को तैयार करने में ज़हरीले भाषणों (Hate Speeches) की बड़ी भूमिका है।

नफ़रत देश हित में नहीं

इस्लाम तथा मुसलमानों के प्रति भय, घृणा तथा दुश्मनी का माहौल पैदा करना, कुछ लोगों के राजनैतिक हित में हो सकता है तथा कुछ लोगों के पूर्वाग्रहों की पूर्ति कर सकता है उन्हें क्षणिक सुख दे सकता है, परन्तु नयी पीढ़ी में देश के एक बड़े समुदाय के प्रति दुर्भावना भर देना, किसी भी स्थिति में देश हित में नहीं होगा। भारत विश्व में एक समृद्ध शक्तिशाली एवं नेतृत्व क्षमता रखने वाले राष्ट्र के रूप में उभर रहा है। यहां मानव संसाधन विशेषकर युवा वर्ग हैं, अच्छी शिक्षण संस्थाएं हैं, अपार प्राकृतिक संसाधन हैं। इन सबके बल बूते हमारा देश, विश्व मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान बना सकता है। बशर्ते कि देश का राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण शान्तिमय हो, यहां कानून का शासन हो, इन्साफ़ को सर्वोपरि रखा जाए तथा सभी धर्मों और उनके अनुयायियों को समान दृष्टि से देखा जाए। यही भारत की आत्मा है और यही हमारा संविधान कहता है। भेदभाव किसी के साथ न हो, नफ़रत को बढ़ावा न दिया जाए, किसी के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर फैसले न लिए जाएं। धर्म, जाति, भाषा क्षेत्र या लिंग के आधार पर कोई अन्तर न हो। परस्पर भाईचारे, सौहार्द एवं सहयोग के सिद्धान्त को अपनाकर भारत निश्चित रूप से विश्व स्तर पर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

इस्लाम से डरने की ज़रूरत नहीं

इस्लाम धर्म से डरने की आवश्यकता नहीं है। यह सब धर्मों के आदर की शिक्षा देता है एवं सभी धर्म ग्रन्थों को मान्यता देता है (कुरआन 2:4)। सभी धर्म गुरूओं (ईश दूतों) में आस्था का आदेश देता है (कुरआन 2:285)। यह भी आदेश देता है कि धर्म के मामले में ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं (कुरआन 2:256)। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को सम्पूर्ण

ब्रह्माण्ड के लिए रहमत और दयालुता बताया गया है (21:107)। उनकी शिक्षाएं संपूर्ण मानवजाति के लिए हैं। संस्कृत के विद्वानों के शोधानुसार हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के आगमन की भविष्यवाणी भारतीय धर्म ग्रन्थों में उल्लिखित है (देखिए पंडित वेद प्रकाश उपाध्याय के शोध)। कुरआन की शिक्षाएं समस्त इन्सानों के लिए हैं। ईशभक्ति, ईशपरायणता, परलोक में मोक्ष की प्राप्ति, संसार में इन्साफ, बराबरी, शोषणमुक्त, प्रेम तथा दया भाव से परिपूर्ण सामाजिक जीवन एवं समृद्ध आर्थिक वातावरण पर बल दिया गया है।

हां, प्रत्येक समाज की भांति मुस्लिम समाज में भी कुछ लोग सही सिद्धान्तों से हटकर असत्य, अन्याय तथा शोषण का मार्ग अपना सकते हैं, हिंसा और आतंक जैसे कार्यों तक जा सकते हैं। ऐसे लोगों का समर्थन तो दूर उन पर कठोर दण्डात्मक कार्यवाही का मुस्लिम समाज ने सदा आह्वान किया है जो एक निष्पक्ष न्यायिक प्रणाली के माध्यम से हो न कि भीड़ तन्त्र या पूर्वाग्रहग्रस्त लोगों के द्वारा। साथ ही मुस्लिम समाज की इस जिम्मेदारी से कोई इनकार नहीं कर सकता कि वे समाज सुधार के कार्य को दृढ़ता से करता रहे तथा हर प्रकार की नकारात्मक सोच से लोगों को बचाए। मुसलमानों का सम्पूर्ण जीवन कुरआन तथा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की शिक्षाओं के अनुरूप हो, वे सबके लिए रहमत साबित हों, समाज तथा अपने वतन के विकास एवं उत्थान में तथा यहां अमन शान्ति व सदाचार के माहौल को बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगा दें। यही इस्लाम की शिक्षा है और ईश्वर को भी यही पसन्द है।

मुसलमानों की ज़िम्मेदारी

मुसलमानों के धर्मगुरूओं, बुद्धिजीवियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे देशवासी भाई बहनों की भ्रांन्तियों को उनके मन के काल्पनिक या मीडिया द्वारा बैठाए गए भय को दूर करने का प्रयास करें तथा उन्हें वास्तविकता से अवगत कराएँ। आम मुसलमान भी अपने कार्य, व्यवहार एवं आचरण द्वारा लोगों को इस्लाम की शिक्षाओं से परिचित कराएं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी न्याय के मार्ग से विचलित न हों। किसी प्रतिक्रिया या प्रतिशोध का शिकार न हों और अल्लाह पर पूरा भरोसा रखें।

सकारात्मक वातावरण ज़रूरी

जैसा कि उल्लेख किया गया कि समाज में भय, नफ़रत तथा दुश्मनी के इस वातावरण से हो सकता है कुछ लोगों को सामयिक रूप से कुछ राजनैतिक लाभ प्राप्त हो जाए, परन्तु यह देश तथा

समाज के लिए घातक है। सभ्य समाज में भीड़ द्वारा हत्याएं, नवजवानों को हथियार चलाने की ट्रेनिंग, एक समुदाय विशेष को प्रत्येक मुद्दे पर दोषी मानते हुए एक 'विलेन' बनाकर पेश करना, इतिहास की मनगढ़न्त व्याख्या करना, यह प्रचारित करना कि इस्लाम और मुसलमानों में कुछ भी भला नहीं है तथा मुसलमानों के योगदान को स्वीकार करने के स्थान पर उनमें केवल बुराई ही देखना और दिखाना, कुछ गिने चुने लोगों के अपराधों के लिए पूरे समुदाय को 'गुनाहगार' घोषित कर देना किसी भी प्रकार उचित एवं न्यायसंगत नहीं है। इससे बड़ी त्रासदी और क्या होगी कि ज़ुल्म व ज़्यादती करने वाले अत्याचारियों का महिमा मन्डन किया जाए तथा उन्हें सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाए।

न्यायप्रिय लोग आगे आएं

इस नकारात्मक सोच से समाज को निकालने के लिए सभी सम्प्रदायों के प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित न्यायप्रिय लोग आगे आएं। सभी पक्षों के बीच सौहार्द बनाने के लिए सम्पर्क एवं वार्ता की प्रक्रिया जारी रहनी चाहिए। जिस बड़े पैमाने पर माहौल को बिगाड़ा जा रहा है उसका तुरन्त नोटिस लेना चाहिए। प्रिन्ट मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया तथा शैक्षणिक संस्थाओं को भी देश के वातावरण को सुधारने में सकारात्मक भूमिका के लिए तैयार करने की आवश्यकता है। इससे पहले कि नफ़रत का विष घातक हो जाए हमें सचेत हो जाना चाहिए । देश में सभी धर्मों और सम्प्रदायों के बीच वही आपसी विश्वास, सौहार्द एवं भाईचारा स्थापित हो जाए, जिसके लिए भारत विख्यात रहा है। यही वह फार्मूला है जिससे अमन शान्ति एवं आर्थिक खुशहाली स्थापित होगी तथा भारत विश्व पटल पर अगुवाई की भूमिका निभाने की स्थिति में होगा।

विषय से सम्बन्धित पुस्तकें :–

- इस्लाम : आतंक या आदर्श – लेखक श्री लक्ष्मी शंकराचार्य
- इतिहास के साथ यह अन्याय – लेखक प्रो0 बी0 एन0 पाण्डेय
- इस्लाम के बारे में शंकाऐं – लेखक श्री मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी
- इस्लाम दयालुतापूर्ण ईश्वरीय धर्म – डा० फरहत हुसैन

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
dawah.jih@gmail.com